2020

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

24 पृष्ठीय

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे ↓

परीक्षा का विषय	विषय कोड	परीक्षा का माध्यम
	5 1	English

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, म.प्र. भोपाल BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYAPRADESH

[redacted]

पुस्तिका का क्रमांक: 320 - 1640675

परीक्षार्थी का रोल नम्बर

अंकों में: - 2 0 4 2 2 5 2 0 8

शब्दों में: Two Zero Four Two Two Five Two Zero Eight

उदाहरणार्थ	1	1	2	4	3	9	5	6	8
	एक	एक	दो	चार	तीन	नौ	पांच	छः	आठ

क :– पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या अंकों में X शब्दों में X

ख :– परीक्षार्थी का कक्ष क्रमांक 12

ग :– परीक्षा का दिनांक 06 03 2020

परीक्षा का नाम एवं परीक्षा केन्द्र क्रमांक की मुद्रा

हायर सेकण्डरी परीक्षा 421002

पर्यवेक्षक का नाम एवं हस्ताक्षर	केन्द्राध्यक्ष / सहायक केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे ↓

प्रमाणित किया जाता है कि मूल्यांकन के समय पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या उपरोक्तानुसार सही पाई होलो क्राफ्ट स्टीकर क्षतिग्रस्त नहीं पाया गया तथा अन्दर के पृष्ठों के अनुरूप मुख्य पृष्ठ पर अंकों की प्रविष्टी एवं अंकों का योग सही है।

निर्धारित मुद्रा : नाम, पदनाम, मोबाईल नम्बर, परीक्षक क्रमांक एवं पदांकित संस्था के नाम की मुद्रा लगाएं।

उप मुख्य परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा	परीक्षक ... निर्धारित मुद्रा
प्रतापसिंह मौर्य परीक्षक क्रमांक–9510198 शा.उत्कृष्ट उ.मा.वि.झाबुआ मा.नं.–9407405821	श्रीमती ... सोनी वरिष्ठ अध्यापक (हिन्दी) प. क्र.- 9510270 शा.क.उ.मा.वि.झाबुआ

(बायें हाशिये में) परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे

नोट :– "हायर सेकेण्डरी परीक्षा में केवल वाणिज्य संकाय के विषयों तथा ... परीक्षा में प्रायोगिक विषय को छोड़कर शेष विषयों हेतु नियमित एवं स्वाध्यायी छात्र ... 100 अंकों का होगा किन्तु नियमित छात्रों को 100 अंक के प्राप्तांक ... एवं स्वाध्यायी छात्रों को 100 अंक के प्राप्तांक ही अंकसूची में प्रदर्शित ...

केवल परीक्षक द्वारा भरा जावे।

प्रश्न क्रमांक के सम्मुख प्राप्तांकों की प्रविष्टी करें।

प्रश्न क्रमांक	पृष्ठ क्रमांक	... अंकों में
1		
2		
3		
4		
5		
6		
7		
8		
9		
10		
11		
12		
13		
14		
15		
16		
17		
18		
19		
20		
21		
22		
23		
24		
25		
26		
27		
28		

Laser/Inkjet/Copier Label A4ST-16 99.1X33.9mmX16

SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक - 1

(i) ओजगुण

(ii) माँ

(iii) महात्मा गांधी

(iv) समास शैली

(v) तीन

BSE

प्रश्न क्रमांक - 2

(i) उद्भव

(ii) गोपालसिंह 'नेपाली'

(iii) क्रांति का

(iv) तत्पुरुष

(v) असंभव कार्य करना

BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक - 3

(i) असत्य

(ii) सत्य

(iii) सत्य

असत्य

सत्य

BSE

प्रश्न क्रमांक - 4

(i) धरती का ताज - हिमालय

(ii) अमोघ शक्तियाँ - शब्द और कृति

(iii) घटा - काले बादलों का समूह

(iv) आकाशवाणी - पारिभाषिक शब्द

(v) विपरीतार्थी शब्द-युग्म - लाभ - हानि

पूर्व पृष्ठ   कुल अंक

BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक - 5

(i) दैविक, दैहिक और भौतिक ताप-त्रय माने गए है।

(ii) बल के अभाव मे बुद्धि-कौशल पंगु है।

सिरचन 'ठेस' कहानी का मुख्य पात्र है।

बलवान् को अपने बल का उपयोग लोगो के हित मे करना चाहिए।

B S E

(v) जिस मे एक प्रधान उपवाक्य हो और एक आश्रित वाक्य है, उसे मिश्र वाक्य कहते है।

प्रश्न क्रमांक - 6 (अथवा)

उ० = आज का युग संचार का युग है। दूरदर्शन का प्रभाव अधिक है। दूरदर्शन पर विभिन्न प्रकार के नाटक, कार्यक्रम, कहानी आते रहते है। लोग पुस्तक पढ़ने मे रुचि नही रखते इसीलिए पुस्तक पढ़ने की आदत कम होती जा रही है।

प्रश्न क्रमांक - 7 (अथवा)

उ० = भूख से व्याकुल बच्चे ने जब महिला से पानी का गिलास मांगा तो महिला ने उसे दूध का गिलास लाकर दिया। दूध पीने के बाद बालक ने महिला से सवाल किया कि - "इस दूध का मूल्य कैसे चुका पाऊगा।"

BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL

प्रश्न क्र. पृष्ठ

~~प्रश्न क्रमांक - 8~~

~~उ० = i) रामचन्द्र शुक्ल~~
~~ii) रघुवीर सिंह~~
~~iii) देवेन्द्र दीपक~~
~~iv)~~

प्रश्न क्रमांक - 8

शुक्ल युगीन चार निबंधकार -

उ० = i) रामचन्द्र शुक्ल
ii) रघुवीर सिंह
iii) बाबू गुलाबराय
iv) धर्मवीर भारती

B S E

प्रश्न क्रमांक - 9

उ० =

i) इस युग मे व्यास शैली का प्रयोग हुआ है।

विज्ञान से सम्बन्धित कई निबंध लिखे गए।

प्रश्न क्रमांक - 10

उ० = कर्मधारय समास => जिन सामासिक पदो मे विशेष्य-विशेषण का या उपमान और उपमेय का भाव हो उसे कर्मधारय समास कहते है।

उदाहरण => कमलनयन => कमल के समान नयन

BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक - 11

उ =

(i) हमें अपनी उपलब्धियों पर गर्व करना चाहिए।

(ii) ...ह बुद्धिमती स्त्री है।

प्रश्न क्रमांक - 12

भाव पल्लवन => माता और जन्मभूमि स्वर्ग से महान है। इसका तात्पर्य है कि हमें अपनी माता के प्रति सदैव सम्मान का भाव रखना चाहिए। जिस जन्मभूमि पर हमने जन्म लिया है उसके प्रति हमेशा देशप्रेम की भावना रखनी चाहिए क्योंकि वे स्वर्ग से भी महान है।

प्रश्न क्रमांक - 13

उ =

(i) स्वर्ग सिधार जाना - मृत्यु हो जाना

प्रयो. ...राजेश के पिता स्वर्ग सिधार गए।

(ii) भगीरथ प्रयत्न करना - कठोर परिश्रम करना।

प्रयोग किसान खेत में भगीरथ प्रयत्न करते है।

प्रश्न क्रमांक - 14 [अथवा]

उ =

पारिभाषिक शब्द => ग्राम पंचायत, चिकित्सालय

तकनीकी शब्द => माउस, तंत्रिका

प्रश्न क्रमांक -15 [अथवा]

उ० =

(i) कड़वा => मीठा
धनी => निर्धन
सजीव => निर्जीव
आसान => कठिन

प्रश्न क्रमांक - 16

उ० = सितम्बर मास आ चुका था किंतु वर्षा नहीं हुई थी। फसले सूख रही थी। पानी के लिए त्राहि-त्राहि मची हुई थी। जब वर्षा हुई थी सारा वातावरण मनोहारी हो गया। वर्षा की बूँदो के शीतल स्पर्श से मन पुलकित हो गया। सड़के साफ-सुथरी हो गयी। खेत-खलियान मे पुन: संचार हो गया। इसी प्रकार सभी का मन वर्षा होने के कारण आनन्दित हो गया।

B
S
E

प्रश्न क्रमांक -17 [अथवा]

उ० = प्रस्तुत कथन से तात्पर्य है कि बल का सदुपयोग करके ही हमे सफलता प्राप्त होती है। उदाहरण के तौर पर राम और कृष्ण मे अपार बल था। उन्होंने अपने बल का सदुपयोग लोगो एवं प्रजा के हित मे किया तो आज उनकी जयन्तियाँ मनाई जाती है। इसी प्रकार रावण और कंस भी अत्यंत बलशाली थे पर उन्होंने अपने

BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL, BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL, BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL, BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL

प्रश्न क्र.

बल का दुरूपयोग किया तो आज वे घृणा के पात्र माने जाते है। इसीलिए "सबल के बल का सदुपयोग ही सफलता की कुंजी है"

प्रश्न क्रमांक - 18

8
उ० = पूर्ण उच्च लक्ष्य का अर्थ है मन को किसी पूर्ण उच्च लक्ष्य मे लगाना। यह लक्ष्य है सेवाकार्य करना देश की सेवा मे स्वयं को लगाना और दीन-दुखियो की सेवा ~~कर्म~~ करना। जब व्यक्ति इन कर्मो मे लग जाता है तो उसके मन मे व्याप्त आसक्ति समाप्त होने लगती है। विद्यार्थी को अध्ययन करना चाहिए यही उसका पूर्ण उच्च लक्ष्य है।

प्रश्न क्रमांक - 19 [अथवा]

10
उ० = कवि 'गोपालसिंह नेपाली' ने कविता 'हिमालय और हम' मे भारतवासियो के हिमालय से कई सम्बंध बताए है। तीन निम्नलिखित है:

(i) हिमालय पर सूर्योदय और सूर्यास्त का सौंदर्य एक समान रहता है उसी प्रकार भारतवासी सुख और दुःख को एक समान ग्रहण करते है।

(ii) हिमालय की तरह भारतवासी भी अटल, अडिग और अविचल रहते है।

योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 9 के अंक | कुल अंक

प्र. क्र.

(iii) हिमालय में तूफानों से टकराने की क्षमता है उसी प्रकार भारतवासी से टकराने वाले शत्रु दम तोड़ देते हैं।

प्रश्न क्रमांक - २० [अथवा]

उ० - महाकवि भूषण ने महाराजा छत्रसाल के शौर्य का वर्णन किया है। उन्होंने बताया है कि छत्रसाल की तलवार सूर्य की प्रलयकालीन महाज्वाला के समान चमकती है। जिस प्रकार सूर्य की किरणें अंधकार को नष्ट कर देती हैं उसी प्रकार छत्रसाल की तलवार शत्रु रूपी अंधकार को चीर के रख देती है।

प्रश्न क्रमांक - 21 [अथवा]

उ० - जब कृष्ण माँ यशोदा से गाय चराने हेतु वन जाने की हठ करते हैं तो माँ यशोदा उन्हें वन की अनेक कठिनाईयाँ बताती है :-

(i) वन बहुत दूर दूर है तुम अपने छोटे-छोटे पैर से वहाँ कैसे जाओगे।

(ii) वन से लौटोगे तो श्याम हो जाएगी अत: भूख-प्यास से व्याकुल हो जाओगे।

(iii) गायों के पीछे भागते रहने से तुम्हारा कमल बदन मुरझा जाएगा।

BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक -22 [अथवा]

नालंदा विश्वविद्यालय की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं।

(i) नालंदा प्राचीनकाल में शिक्षा का महान केन्द्र था। संसार में इसका खूब दबदबा था।

(ii) नालंदा के तीन महान पुस्तकालय थे - 'रत्नसागर', 'रत्नरंजक' और 'रत्नोदधि'।

(iii) यहाँ दस हजार विद्यार्थी एवं पन्द्रह सौ आचार्य थे।

(iv) यहाँ भाषा, व्याकरण, दर्शनशास्त्र, बौद्धदर्शन, चिकित्साशास्त्र, इतिहास आदि के अध्ययन की अच्छी सुविधा था।

(v) यहाँ नागार्जुन, आचार्य ज्ञानश्री, धर्मकीर्ति, सागरमति, गुणमति, स्थिरमती जैसे महान आचार्य थे।

प्रश्न क्रमांक -23

उ० = जब शिवाजी अपनी चतुरंगिनी सेना - हाथी, अश्व, रथ एवं पैदल को अस्त्र-शस्त्र से सजा कर युद्ध जीतने निकलते हैं तो नगाड़ो की घनघोर ध्वनि से सेना में उमंग एवं साहस का भाव उत्पन्न हो जाता है।

माध्यमिक शिक्षा मण्डल मध्यप्रदेश

प्रश्न क्र.

हाथियों के गंडस्थल (कान) में से मद बहकर नदी - सा बहता है तो ऐसा लगता है जैसे कि नदी - नालों में उफान आ रहा हो। सेना के कदमों से आकाश में धूल उड़ती है तो ऐसा लगता है कि सूर्य भी तारे के समान हो। हाथियों के परस्पर टकराने से ऐसा लगता है जैसे कि पर्वत उखड़ रहे हो। सेना के तेज कदमों से समुद्र भी थाली के पारे के समान दिखाई देता है।

BSE

प्रश्न क्रमांक - 24

संदर्भ => प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्यपुस्तक 'मकरंद' के 'जागो फिर एक बार' नामक कविता से ली गई है जिसके कवि 'सूर्यकांत त्रिपाठी निराला' है।

प्रसंग => सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' हमें गुरू गुविंद सिंह की उक्ति के माध्यम से बलिदान करने का उद्‌बोधन दे रहे है।

व्याख्या => कवि भारतवासी को कहते है कि वीर अपने प्राणों का बलिदान कर स्वर्ग प्राप्त करते है। उनका गुणगान महासिन्धु गाता है। सैंधव के घोड़ो और चतुरंगीनी सेना - हाथी, घोड़ा, रथ और पैदल से सवा सवा लाख पर एक को चढ़ाऊंगा अर्थात् एक सैनिक दुश्मन सेना के सवा लाख सिपाहियों के बराबर है। यदि वह रणभूमि में मरा तो सवा लाख को मारकर मरेगा। यह उक्ति गुरू गुविंद सिंह की है।

BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL

प्रश्न क्र.

काव्य सौंदर्य - (i) मुक्त छंद है
(ii) तत्सम शब्दावली का प्रयोग हुआ है।
'चतुरंग चमू' में अनुप्रास अलंकार एवं 'सवा-सवा' में पुनरुक्तिप्रकाश अलंकार है।
कविता में ओज गुण है।

प्रश्न क्रमांक - 25

30=(i) जीवन का उद्देश्य - 'संघर्ष' इस पद्यांश का उचित शीर्षक है।

B
S
E

30=(ii) रचना की दृष्टि से मिश्र वाक्य है।

30=(iii) परिश्रम, दृढ़ इच्छाशक्ति व लगन सफलता प्राप्त करने का महा शस्त्र करते है।

30=(i) 'संघर्ष' - सफलता का मार्गदर्शन' इस षष्ठ्यंश का उचित शीर्षक है।

30=(iv) हमें कठिनाइयों एवं दुखों का सामना संघर्ष के साथ करना चाहिए क्योंकि जीवन एक कर्मक्षेत्र है और हमें जीवन संघर्ष के लिए ही मिला है। हम संघर्ष करके ही सफलता प्राप्त कर सकते है।

13

कुल अंक

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक - 26

(i) 'सच्ची वीरता' इस पद्यांश का उचित शीर्षक है।

(ii) कवि सच्चा धर्म दुश्मन के आगे कभी न झुकने को मानते है।

(iii) च्चा कर्म, सेवा, धर्म वहीं है जो कभी दुश्मन सामने न झुके। कितने भी कष्ट हो रंतु अपने कर्तव्य को न भूले

B
S
(iv) दुश्मन का विलोम शब्द मित्र है।
F

P.T.O.

BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक - 27 (अथवा)

सेवा मे
श्रीमान प्रधानाचार्य महोदय
अल्फा उ०मा० विद्यालय
नीमच (म०प्र०)

विषय - शुल्क मुक्ति के लिए प्राचार्य को प्रार्थना पत्र

महोदय,

सविनय निवेदन है कि मेरे पिताजी रंगाई पुताई का काम करते है परन्तु पिछले दो महीने से वह बीमार है। वह काम पर नहीं जा सकते। फलस्वरूप घर की आर्थिक स्थिति दयनीय हो गयी है। हमे जैसे-तैसे रोज गुजारा करते है। इस स्थिति मे स्कूल की फीस जमा कराना असम्भव है।

अतः मेरी स्थिति को ध्यान मे रखते हुई मुझे पूर्ण शुल्क मुक्ति प्रदान करने की कृपा करे।

धन्यवाद

दिनांक - 06-03-2020

आपका आज्ञाकारी शि
अ ब स
कक्षा - 12वी

B
S
E

योग कुल अंक

BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक - 28

(अ) राष्ट्रीय एकता

रूपरेखा :-
(1) प्रस्तावना
(2) राष्ट्रीय एकता का अर्थ
(3) भारत में एकता
(4) एकता में बाधाएं
(5) हमारे दायित्व
(6) एकता से शक्ति का संचार
(7) उपसंहार

B S E

प्रस्तावना => भारत में विभिन्न सम्प्रदायों, जातियों एवं धर्मों के लोग निवास करते है। इतने में भी यहाँ अनेकता में एकता के दर्शन होते है। हम इसका उदाहरण स्कूलों में देख सकते है जहाँ विभिन्न वर्गों के लोग (विद्यार्थी) एक साथ शिक्षा ग्रहण करते है।

भारतमाता का मंदिर यह, समता का संवाद यहाँ है
हिन्दु, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई पावें सब प्रसाद यहाँ है।

राष्ट्रीय एकता का अर्थ => राष्ट्रीय एकता का अर्थ है सामाजिक, भावत्मकता एवं आर्थिकता मे सभी देशवासियों की एकता होना। यही राष्ट्रीय एकता हमें प्रगति की ओर ले जाती है।

10 के अंक कुल अंक
BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL

प्रश्न क्र.

भारत मे एकता ⇒ भारत मे हम अनेकता मे एकता के दर्शन किए जा सकते है। यहा के लोगो के मध्य भोजन, भाषा एवं रहन सहन मे अंतर पाया जा सकता है परंतु सब सामाजिकता एव भावत्मकता की दृष्टि से एक सूत्र मे बंधे हुए है।

एकता मे बाधाएं ⇒ आज मनुष्यो मे राष्ट्रीय एकता का अभाव दिखाई देता है। सम्प्रदायिकता, आतंकवाद, अलगाववाद, क्षेत्रीयता, भाषागत भेदभाव भारतीय एकता की समरसता को भंग कर रहे है। सम्प्रदायिकता के चलते ही देश के हिस्से हुए और रक्त की सरिताएं प्रवाहित हुई। सम्प्रदायिकता लगाव की भावना को नष्ट कर देती है। कुनीतिस वोट के पीछे देश की एकता भंग करते है। उनमे नैतिकता नही होती। क्षैत्रीयती वातावरण को कलुषित करती है।

हमारा दायित्व ⇒ हमे राष्ट्र मे फिर से एकता बनाने की आवश्यकता है। इसमे विद्यार्थी बहुत महत्वपूर्ण कार्य कर सकते है। वह सभी लोगो मे राष्ट्रीय एकता बनाने का प्रयास कर सकते है। राष्ट्रीय एकता से सम्बंधित अनेक कार्यक्रमो मे सक्रिय भाग लेकर भारतवासी को प्रेरित कर सकते है।

B
S
E

BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL

प्रश्न क्र.

उपाय

दूसरा नेता, कार्यकर्ता, अधिकारी अपना कार्य नैतिकता से कर के राष्ट्र को एक कर सकते है। इसमे सभी का सहयोग आवश्यक है।

एकता मे शक्ति का संचार => यह बात तो सही है कि शक्ति का संचार तो एकता मे ही होता ~~ही~~ है। कोई भी देश एकता के बिना प्रगति नही कर सकता। उदाहरण के तौर पर एक एक लकड़ी को कोई भी तोड़ सकता है पर जब ~~लकड़ी~~ लकड़ियों को एक साथ कर दा तो उसे तोड़ना दुर्गम है। इसी प्रकार भारतवासी मे एक साथ मिलकर रहे ताकि हमारा देश भी ~~प्रकृत~~ प्रगति की ओर आगे बढ़े।

उपसंहार => इस की ओर समाज सुधारक दार्शनिक प्रयासरत है। वह उनकी कामना है कि देश मे बन्धुत्व है और देश प्रगति की ओर आगे बढ़ता रहे

P. T. O.

B
S
E

BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL

प्रश्न क्र.

(ग)

समय का महत्व

रूपरेखा :-
(1) प्रस्तावना
(2) समय का महत्व
(3) समय का सदुपयोग
(4) समय की शक्ति
(5) समय के दुरुपयोग से हानियाँ
(6) ~~समय~~ हमारा संकल्प
(7) समय से प्रगति
(8) उपसंहार

B S E